ओमशांति। बेहद का बाप अपने सिकीलधे बच्चों को समझा रहे हैं, जिन बच्चों ने बाप को जाना है और बाप की शरण आए हैं। कहते हैं न– प्रभु तेरी शरण, आओ! शरण मिले तब जबकि बाप आएँ और बच्चों को समझाएँ कि क्यों बाप के शरण पड़ते हैं; क्योंकि सब महान दुःखी हैं। भारत दुःखधाम है। एक/दो को दुःख बहुत देते रहते हैं। बाप ने समझाया है, यह है कुमारी हंस मंडली। दुनिया है बगुले। (य)हाँ पावन बच्चों बिगर कोई आ नहीं सकते। दुनिया में सब हैं बगुले, मांस खाते हैं। इस समय भारत में जो गृहस्थ धर्म वाले मनुष्य हैं, वह एक/दो का मांस खाते हैं; इसलिए उनको मलेच्छ कहा जाता है। एक/दो को मूत पिलाते हैं। कब से मलेच्छ बने हैं? जब से भारतवासी आदि सनातन धर्म वाले वाम मार्ग में गए हैं। बाप समझाते हैं– बच्चे, भारत पावन था। भारत को ही सुखधाम कहा जाता था, और कोई खण्ड को सुखधाम नहीं कहेंगे। भारत ही सुखधाम, भारत ही दुःखधाम बनता है। अब भारतवासी बहुत दुःखी हैं; क्योंकि एक/दो को मूत पिलाते हैं; परन्तु यह बात उन्हों को कोई समझाते नहीं हैं। बाप समझाते हैं, सन्यासी हैं शंकराचार्य मठ धर्म के; परन्तु इसके लिए कोई ऐसे नहीं कहेंगे, यह पावन है। वह घर–बार छोड़ते हैं; परन्तु खुद भी गाते हैं– पतित–पावन सीता–राम. ..। खूब तालियाँ बजाते गाते रहते हैं। अभी तो सन्यासी लोग भी बहुत धनवान हो गए हैं। वास्तव में सन्यासी लोग घर–बार आदि भी छोड़ जाते थे। गोपीचन्द ने भी राजाई छोड़ दी। घर–बार छोड़ जाकर सन्यासी बना, भीख पर चला। तो उन्हों को पैसा इकट्ठा करना न चाहिए। सन्यासियों के लिए बाबा ने समझाया है, वह नारी को नागिन समझते हैं। अब वह नारी पावन कैसे बनी? तुम अब आई हो पतित–पावन बाप के पास, जो एक ही प०पि०प० है। वह ही सारी दुनिया को पावन करते हैं। मनुष्य, मनुष्य को पावन बना न सके। यह है ही पतित दुनिया। कोई भी पावन नहीं। कहते भी हैं– हे प०पि०प०! और फिर कह देते– ईश्वर सर्वव्यापी है। शिवोहम्, तत् त्वम्। सब बेचारे भूले हुए हैं बाप को। यह है ही काँटों की दुनिया। यह भारत फूलों का था; अब काँटों का है, दुःखधाम है; परन्तु मनुष्य समझते नहीं; जैसे मनुष्य को श्राप मिलता है। भले वह दिवाला सारा हुआ हो, तो भी शराब से एकदम नशा चढ़ जाता है। वैसे ही मनुष्य को यह पता नहीं पड़ता कि विख ही पतित बनाते हैं, तब तो सन्यासी भी विख न देने लिए घर–बार छोड़ते हैं; परन्तु वह है निवृत्तिमार्ग। यहाँ तो बाप आए हैं। जो आधा कल्प से दुःखी हैं वह आकर शरण लेते हैं। दुःखी करने वाली है माया। 5 विकारों के महारोगी हैं मनुष्य। उनको कहा ही जाता है डर्टी बूट्स। रावण ने असुर बनाया है। जब बिल्कुल दुःखधाम बन जाता है तब ही फिर बाप आकर सुखधाम स्थापन करते हैं। तुम हो रूहानी सोशल वर्कर्स। तुमसे बाप सेवा कराते हैं कि बच्चे, तुम इस भारत को स्वर्ग बनाओ। सारा मदार योग पर है। योग में कोई 7 रोज़ अच्छी रीति रहे तो कमाल हो जाए! ऐसे कोई योग में टिक न सके– घर याद आवेगा, मन भागता रहेगा, खगे माफिक वाचते रहेंगे। सात रोज़ कब योग में रह न सके। 7 रोज़ मशहूर है। गीता–भागवत अथवा ग्रन्थ वा पाठ भी 7 रोज़ रखते हैं। यह रसम–रिवाज़ सब इस समय संगमयुग की है। 7 रोज़ भट्ठी में रहना पड़े। किसकी भी याद न आवे। एक बाप के साथ योग लगा रहे। 7 रोज़ इस एकरस अवस्था में रहना है बड़ा मुश्किल। कहाँ भी बुद्धि न जावे। साथ में सिर्फ ब्राह्मण कुल के ही हों। सिवाय ब्राह्मणों के अंदर कोई आ न सके। तुम बच्चे जानते हो, हमारा यह यादगार मंदिर यहाँ ही है। हम अभी झाड़ के नीचे बैठ राजयोग सीख रहे हैं। जगदम्बा भी है। तुम बच्चे भी हो। तुम हो सब मनुष्यों की मनोकामनाएँ स्वर्ग में पूरी करने वाली अथवा मनुष्यों को मुक्ति–जीवनमुक्ति का फल देना। तुम एक्सपर्ट हो। दुनिया में कोई नहीं जानते कि मुक्ति–जीवनमुक्ति इसको(किसको) कहा जाता। कौन देते हैं? पतित दुनिया में कौन पावन बना सकते हैं? सन्यासी लोग शांति के लिए घर–बार छोड़ते हैं, जंगल में जाते हैं; परन्तु शांति तो मिल नहीं सकती। आत्मा का स्वधर्म है शांति और मनुष्य बाहर ढूँढ़ते हैं। यह किसको पता नहीं है कि आत्मा का स्वधर्म

है ही शांति। (हार का मिसाल) यह ऑरगन्स हैं– चाहे कर्मेन्द्रियों से काम लिओ या चाहे न लिओ। हर आत्मा इस शरीर से अपने को डिटैच कर देते हैं। जैसे रात को आत्मा डिटैच हो जाती है न! सब कुछ भूल जाती है। इसको फिर नींद कहेंगे। यहाँ सिर्फ शांति में तुम बैठती हो। आत्मा कहती है, मैं इस कर्म–इन्द्रियों से काम कर थक गई हो(हूँ)। अच्छा, अपन को शरीर से डिटैच कर लो। यह ऑरगन्स हैं कर्म करने लिए। यह नॉलेज बाप ही सब जानते हैं– डिटैच कर बैठ जाओ, कुछ बोलो भी नहीं; परन्तु ऐसे डिटैच हो कहाँ तक बैठेंगे! यह तो तुम जानती हो कर्म बिगर रह न सकते। डिटैच तो हुए; परन्तु फिर साथ में फायदा भी चाहिए। सिर्फ डिटैच हो बैठने से इतना फायदा नहीं होगा। डिटैच होकर फिर मुझे याद करो तो तुमको बहुत फायदा होगा, शक्ति मिलेगी। बाप समझाते हैं बच्चों को कि यह है ज्ञान इन्द्रसभा। यहाँ तुम सब रत्न बैठे हो। कोई पत्थरबुद्धि बैठा होगा तो वायुमंडल को खराब कर देगा; क्योंकि वह शिवबाबा की याद में रहेंगे नहीं। उसको अपने मित्र–संबंधी आदि याद पड़ते रहेंगे। तुमको तो निरंतर याद करना है बाप को। यह कोई कॉमन सतसंग नहीं, यह बड़ी यूनिवर्सिटी है। मैडीकल कॉलेज में कोई इलिट्रेट आ बैठे तो क्या समझेगा? कुछ भी नहीं। उनको तो अलाउ भी न करेंगे। सिर्फ देखने से कुछ समझ न सकेंगे। इस नॉलेज को भी विकारी, पतित समझ न सके; इसलिए ऐसे को अलाउ नहीं किया जाता है। कोई कहे– हम क्लास में आवें, लैक्चर सुने; परन्तु इससे कुछ समझ न सकेगा। यह यूनिवर्सिटी है मलेच्छ से स्वच्छ देवता बनने की। यहाँ ऐसे कोई को अलाउ नहीं किया जाता है। बाप को तो जान न सके। बाप है गुप्त। तुम जानते हो, बेहद के बाप की शरण में आए हैं, बाप से सदा सुख का वर्सा लेने। बाप खुद कहते हैं, यह ब्रह्मा का जो शरीर है, यह बहुत जन्मों के अन्त का वानप्रस्थ अवस्था वाला है। यह भी बहुत वेद–शास्त्र आदि पढ़ा हुआ है। अभी फिर मैं सब वेद–शास्त्रों का सार इन द्वारा बताता हूँ। ब्रह्मा के हाथ में शास्त्र दिखाते हैं। विष्णु के नाभिकमल से ब्रह्मा निकला। समझाया है विष्णु की नाभि से ब्रह्मा, ब्रह्मा की नाभि से विष्णु निकलता है। ब्रह्मा–सरस्वती दोनों ल०ना० बनते हैं, फिर 84 जन्म पूरा कर, अंत में ब्रह्मा बनते हैं। उन्होंने फिर गाँधी के नाभिकमल से नेहरू दिखाया है। अब यहाँ तो खीर सागर है नहीं। यह है विषय सागर। खीर सागर को सतयुग में दिखाते हैं। तुम बच्चे जानते हो, आधा कल्प से माया ने दुःखी बनाया है। भारत जितना दुःखी और कहाँ नहीं। भारत जितना सुखी भी कोई हो नहीं सकते। बाप कहते हैं, देवी–देवता धर्म तो प्रायःलोप होना ही है, तब तो फिर से नया घर स्थापन करूँ। बरोबर अब स्थापना हो रही है। तुम बच्चे आकर बाप से वर्सा ले रहे हो। जानते हो, स्वर्ग में कौन राज्य करते थे। बचपन में र०कृ०, वही फिर महाराजा–महारानी बने हैं। वहाँ की रसम है, दोनों का नाम बदली होता है। र०कृ०, वही ल०ना० बनते हैं। अब वह कृष्ण की आत्मा 84 जन्म भोगकर अंतिम जन्म में यहाँ है। बाप आया हुआ है। भिन्न नाम–रूप से पढ़ते(पढ़ाते) हैं। श्री कृष्ण का भी साँवरा रूप बैठा है। बाप इनको उस पार ले जाते हैं। शास्त्रों में कहानी दिखाते हैं– कृष्ण को टोकरे में डाल उस पार ले गए। अब शिवबाबा आया हुआ है, तुम बच्चों को आँखों पर बिठाय स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। सारी वंशावली को पढ़ाकर, बाप ले जाते हैं कंसपुरी से कृष्णपुरी में। एक की तो बात नहीं। शास्त्रों में क्या–2 लिख दिया है! रावणपुरी से तुमको नैनों पर बिठाय, सुखधाम ले जाता हूँ। मैं तुम बच्चों को स्वर्ग तक पहुँचाने आया हूँ। फिर इस पुरानी दुनिया का विनाश हो जावेगा। लड़ाई की बातें भी शास्त्रों में हैं; परन्तु अगड़म–बगड़म लिख दिया है। यह दादा भी बहुत पढ़ा हुआ था। अब (बाबा) कहते हैं– इन सबको छोड़ो, मामेकम् याद करो। मैं सबका सद्गुरु हूँ। कंसपुरी कलहयुग को; कृष्णपुरी सतयुग को कहा जाता। अब तुमको रावणपुरी से ले चलता हूँ। चलेंगे कृष्णपुरी सुखधाम में। गाते हैं न– भजो राधे गोविंद। यह हुआ भक्तिमार्ग। अभी तुम राधे गोविन्द फिर से बन रहे हो। अभी तुम्हारा दोनों ताज न रहा है– न लाइट का, न राजाई का। पवित्र को ही लाइट का ताज देते हैं। ल०ना० तो हैं ही सदा

पवित्र। उनको कब सन्यास नहीं करना पड़ता। सन्यास(सन्यासी) पतित होने कारण जन्म ले फिर घर–बार छोड़ते हैं पवित्र बनने लिए। तुम्हारा 21 जन्मों लिए सन्यास होता है। वह कोई 21 जन्म पवित्र नहीं बनते। वह तो विकारी पास जन्म लेते, पतित बन फिर घर छोड़ते हैं। वह है रजोगुणी सन्यास। बाप कहते हैं मैं नॉलेजफुल हूँ। शंकराचार्य को नॉलेजफुल नहीं कहेंगे। नॉलेजफुल एक ही निराकार बाप को कहा जाता है। नॉलेजफुल, ब्लिसफुल, उनमें फुल नॉलेज है। मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन, सृष्टि के आदि–मध्य–अंत का फुल नॉलेज देते हैं, जिससे तुम भी फुल बनते हैं। देवी–देवताएँ हैं ही फुल। तुम बच्चे बाप की गोद में आए हो। जानते हो, हम श्रीमत पर चल फिर से राजभाग लेते हैं। फिर–2 लिया है, गँवाया है। यह है हार–जीत का खेल। माया से हारे हार है, माया से जीते जीत। तुम सर्वशक्तिवान बाप से योग लगाय, शक्ति ले माया पर विजय पाते हो। समझते हो, हमारा 84 जन्मों का ड्रामा अब पूरा होता है, हम फिर से राजभाग लेते हैं। ल०ना० को खीर सागर में दिखाते हैं। यह है विषय सागर। र०कृ० तो छोटे बच्चे थे। कृष्ण को बहुत प्यार से झूलते(झुलाते) हैं। समझते हैं, वह स्वर्ग का फर्स्ट प्रिंस है। कृष्ण को 16 कला कहा जाता, राम को 14 कला। वही कृष्ण फिर 16 कला, फिर 14 कला बनता है। पुनर्जन्म तो लेना पड़े न। बाबा ने समझाया है, पुनर्जन्म सब तो नहीं लेते होंगे न। जो पहले–2 सतयुग में आए होंगे, उन्होंने ही 84 जन्म लिए होंगे। और धर्म वाले 84 जन्म नहीं लेते। समझने की बातें हैं। फादर से वर्सा ज़रूर मिलना चाहिए। वह है स्वर्ग का रचता, तो ज़रूर स्वर्ग का मालिक बनावेंगे। वह फादर रहते हैं परमधाम में। हम भी वहाँ से आते हैं। बाबा को अच्छी रीति याद करना है। याद से शांति मिलेगी। मनुष्य तो कहते हैं, परमात्मा से योग कैसे लगावें? मूँझे पड़े हैं। तुमको अब समझ मिली है। बाप आते ही हैं दुखधाम–सुखधाम के संगम पर। कलियुग अंत है दुःखधाम; सतयुग आदि है सुखधाम। दुःखधाम को बदल सुखधाम तो बाप ही बनावेगा। कितने समझ की बात है! यह पढ़ाई पवित्रता बिगर कोई पढ़ न सके; इसलिए यहाँ पतित को नहीं बिठाया जाता। समझाना है, तुम आधा कल्प के महारोगी हो। माया ने महारोगी बनाया है; इसलिए पहले भट्ठी में रखा जाता है। तुम बच्चे अब हर एक के ऑक्युपेशन को जान गए हो। शिव के मंदिर में जावेंगे तो झट समझ जावेंगे– यह बाबा गति–सद्गति दाता है। सबसे बड़ा से बड़ा तीर्थ भी भारत है; परन्तु गीता में कृष्ण का नाम डाल, शिवबाबा का नाम गुल कर दिया है। शिवबाबा ही आय कर सबको दुख से छुड़ाते हैं। बाकी पानी की गंगा तो पतित–पावन है नहीं। वह तो पहाड़ों से निकली है, इनको पतित–पावनी कैसे कहेंगे! अब देखो, नेहरू मरा, इनकी राख फिंकाते हैं। इसको अंधश्रद्धा कहा जाता है। क्या राख भारत को पवित्र बनावेगी! मनुष्य क्या–2 करते रहते हैं। गाते हैं, मनुष्य जैसा दुर्लभ जन्म है नहीं। सो दुर्लभ जन्म तुम्हारा अभी का यह है, जबकि बाप आया हुआ है। यह तुम्हारा अमूल्य जीवन है। तुम पवित्र बन, भारत को स्वर्ग बनाय देते हो; इसलिए शिवशक्ति भारतमाता गाई हुई हो। तुम जानते हो, बाबा की मदद से भारत को क्या, सारी दुनिया को पवित्र बनाते हैं। जो–2 पवित्रता की अंगुली देते हैं, मन्मनाभव रहते हैं। इसका अर्थ भी तुम ही समझते हो। यह दादा भी नहीं जानता था। इनके बहुत गुरु किए हुए हैं, शास्त्र पढ़े हुए हैं; तब बाबा कहते हैं– मामेकम् याद करो। मैं ही तुम्हारा सब कुछ हूँ। गति–सद्गति दाता हूँ। मनुष्य तो पतित हैं। अब तुम आय हो शिवबाबा के पास, ब्रह्मा द्वारा वर्सा लेने। इस निश्चय बिगर कोई आ न सके। आय कर और ही अशांति फैलाय देंगे। तुम भारत को सुप्रीम शांति में ले जाते हो। यह है स्थापना का कार्य। मनुष्य कर न सके। तुम अभी शिवबाबा की मदद से कर रहे हो। तुमको भी प्राइज़ क्या मिलती है? स्वर्ग के मालिक बनते हो। ऐसे बाबा के बनते भी फिर निश्चयबुद्धि न हैं तो माया एकदम हप कर लेती है। माया की बॉक्सिंग है। बाप को याद नहीं करते हैं तो माया चमाट मार देती है; इसलिए

पुरुषार्थ कर बाप को याद करना है। शिवबाबा कब आया था, यह कोई को पता नहीं है। बाप कहते हैं, फिर मैं आया हुआ हूँ। फिर भक्तिमार्ग में शिवजयन्ती मनावेंगे, फिर कृष्ण जयन्ती होगी। कृष्ण ही फिर नारायण बनते हैं न। अभी तुम बेहद बाप की गोद में आए हो, बेहद का वर्सा लेने कल्प पहले मुआफिक। जितना योग में रहेंगे, योगबल से विकर्म विनाश होते रहेंगे। याद की ऐसे टेव डालनी है जो शरीर छूटे तो दूसरा कोई याद न पड़े, सिवाय एक शिवबाबा के। यह तो पुरानी दुनिया, पुराना शरीर है। हम अब बाबा के पास जाते हैं। इस पुरानी दुनिया को भूलना है। तो भूलने वालों का संग चाहिए न! न भूलने वालों का संग बुद्धि को खराब कर देता है। बाबा कहते हैं, कर्म भल करो, सिर्फ अमृतवेले 3–4 बजे उठकर याद करो, फिर प्रैक्टिस पड़ जावेगी। तो ऐसे करते–2 तुम्हारा योग पक्का हो जावेगा। बाबा, अब तो आपके पास आ रहे हैं। अच्छा, यह है पतित दुनिया। जो नम्बर वन पावन पूज्य था, वही अब पतित पुजारी बन गया है। आत्माएँ परमात्मा अलग रहे बहुकाल....। बहुकाल कौन अलग रहे हैं? तुम जानते हो, जो सतयुग में थे, वही पुनर्जन्म में आए हैं, फिर वही पहले जावेंगे। बाबा ने समझाया है– हम सो देवता थे, फिर सो क्षत्रिय–वैश्य–शूद्र बने। अब ब्राह्मण बने हैं, फिर हम सो देवता बनेंगे। अभी है ईश्वरीय गोद का जन्म, फिर दैवी गोद का, क्षत्रिय गोद का, फिर वैश्य–शूद्र गोद का जन्म होगा। यह बुद्धि में रहना है। तुम्हारा नाम ही रखा है– स्वदर्शनचक्रधारी। फिर यह स्वदर्शनचक्रधारी पने की नॉलेज सतयुग में तुम से भूल जावेगी। बाप कहते हैं– मीठे सिकीलधे अर्थात् 5000 वर्ष बाद आए मिले हुए बच्चे! ऐसे सन्यासी आदि कह न सके। निश्चय होना चाहिए। यह पतित सड़ा हुआ तन है, यह पावन तन नहीं है। उनको कोई पतित कहे तो बिगड़ पड़े। यह तो खुद कहते हैं– नम्बरवन पावन था, अब नम्बरवन पतित है, फिर अब बाबा ने प्रवेश किया है। सर्वव्यापी की तो बात ही नहीं। कृष्ण को कितनी गालियाँ देते हैं– कृष्ण को 16108 रानियाँ थीं, काली देह में पड़ा। अब काली देह अभी है कि सतयुग में? कितने नॉनसेन्स हैं! कृष्ण तो था सतयुग का फर्स्ट प्रिन्स। इनको कितनी गाली देने लग पड़ते हैं। अच्छा, सिकी–2 लधे बच्चों को यादप्यार और गुडमॉर्निंग।